ISSN No. : 2229-3728

निब्बान बोधि

Nibbāna Bodhi

The Research Journal of Religion, Philosophy, Culture and Social Sciences

Kushinagar Bhikshu Sangha, Kushinagar
Pāli Society of India, Varanasi

Scanned by CamScanner

ISSN No. : 2229-3728

निब्बान बोधि

Nibbāna Bodhi

The Research Journal of Religion, Philosophy, Culture and Social Sciences

Volume XI Issue: April 2017 2560 B.E.

Editor
DR. GYANADITYA SHAKYA
Assistant Professor
School of Buddhist Studies & Civilization
Gautam Buddha University, Greater Noida
Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh (India)

Co-Editor
BUDDHA GHOSH
Assistant Professor
Department of Pali & Buddhist Studies
Banaras Hindu University, Varanasi
Uttar Pradesh (India)

Kushinagar Bhikshu Sangha, Kushinagar
Pāli Society of India, Varanasi

Scanned by CamScanner

© Nibbāna Bodhi

Chief Patron
AGGAMAHAPANDITA BHADANTA GYANESHWAR
Chief Priest
Myanmar Buddhist Temple, Kushinagar
Post & District: Kushinagar, Uttar Pradesh (India)

Editorial Board

PROF. BHIKSHU SATYAPALA (Former Head)
Department of Buddhist Studies, University of Delhi, Delhi (India)

PROF. BALCHANDRA KHANDEKAR (Former Head)
Department of Pāli & Prakrit, P.W.S. Arts & Commerce College, RTM Nagpur University, Nagpur, Maharashtra (India)

PROF. RAMESH PRASAD (Head)
Department of Pali & Theravada, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, Uttar Pradesh (India)

BHIKKHU NAND RATAN (Chief Priest)
Sri Lanka Buddha Vihara, Kushinagar, Near Ramabhar Stupa, Post & District: Kushinagar, Uttar Pradesh (India)

PUBLISHED ON: 1st April 2017 (94th Birth Anniversary of Tripitakacharya Dr. Bhikshu Dharmarakshita)

PUBLISHED BY: Kushinagar Bhikshu Sangha, Kushinagar & Pāli Society of India, Varanasi (Uttar Pradesh)

CORRESPONDENCE ADDRESS: Myanmar Buddhist Temple, Kushinagar, Post & District: Kushinagar-274403, Uttar Pradesh (India)
E-mail Address: nibban_bodhi@yahoo.com
Contact Numbers: +91-9935874061, 9935632420 & 9868060572

Pāli Society of India
Dharma Chakra Vihar Buddhist Temple, 15/134 Mawaiya, Sarnath, Varanasi-221007, Uttar Pradesh (India)
Contact Numbers: +91-9838807455, 9454890262, 9935632420
E-mail Address: palidivaso@gmail.com

Note: The matter composed in articles of the *Nibbāna Bodhi* are scholars' views. The journal will not bear any responsibility for them. All the positions in the Editorial Board including Editor & Co-Editor are honorary.

Contribution Rs. 100 **Printed in India**

समर्पण

(1 अप्रैल 1923 - 23 मई 1977)

भगवान गौतम बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली
कुशीनगर के समीप हतवा ग्राम में जन्मे
बौद्ध धर्म-दर्शन के मर्मज्ञ महामनीषी
त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित महास्थविर,
जिन्होंने आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के साहित्यिक,
पुरातात्विक एवं धार्मिक पुनर्जागरण में अविस्मरणीय
भूमिका निभाई,
को सादर समर्पित

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

सब्बसत्तप्पियो लोके सब्बत्थ पूजितो भवे।
देवमनुस्ससंचरो मित्तसहायपालितो॥
देवमनुस्ससम्पत्ति अनुभोति पुनप्पुनं।
अरहत्तफलं पत्तो निब्बाणं पापुणिस्सति॥
पटिसम्भिदा चतस्सो अभिञ्ञा छब्बिधे वरे।
विमोक्खे अट्ठके सेट्ठे गमिस्सति अनागते॥

(बुद्धवचन के संरक्षण जैसे पुनीत कर्म में भागीदार व्यक्ति) लोक में सभी सत्वों का प्रिय होकर सर्वत्र पूजित होता है। मित्र एवं सहायों द्वारा संरक्षित होता है, वह देव-मनुष्य के मध्य विचरण करते समय देव-मनुष्य-सम्पत्ति को पुनः-पुनः प्राप्त करता है। अर्हत्व-फल प्राप्तकर वह अवश्य ही *निर्वाण* प्राप्त करेगा। चार प्रकार की प्रतिसम्भिदाओं, छह प्रकार की श्रेष्ठ अभिज्ञाओं एवं आठ प्रकार के श्रेष्ठ विमोक्षों को प्राप्त करेगा।

महामानव गौतम बुद्ध के सम्पूर्ण धम्म का सारतत्व शील, समाधि एवं प्रज्ञा के रूप में सन्निहित है। समस्त बुद्धों की देशना में समस्त प्रकार के पापकर्मों को न करने, शुभ कर्म करने एवं चित्त को परिशुद्ध रखने के लिए जीवनोपयोगी शिक्षा देखने को मिलती है। बुद्ध का धम्म बहुजन हित-सुख के लिए है, जो आदिकल्याणकारी, मध्यकल्याणकारी एवं पर्यवसानकल्याणकारी है। बुद्धोपदिष्ट धर्म-दर्शन का संकलन ही बुद्धवचन के रूप में जाना जाता है। बुद्धवचन को पालि तिपिटक साहित्य के रूप में भी समझा जा सकता है। पालि तिपिटक साहित्य सुखी मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को भलीभाँति प्रस्तुत करता है। पालि तिपिटक साहित्य में वर्णित कल्याणकारी देशना का यदि सही तरीके से पालन किया जाये, तो व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक पहलू जैसे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक क्षेत्र में अभूतपूर्व सुख-शान्ति एवं समृद्धि को प्राप्त करते हुए सर्वांगींण विकास कर सकता है।

पालि भाषा व साहित्य में वर्णित सद्धर्म के सम्यक् अनुशीलन से मानव जीवन को सुखमय, सार्थक व कल्याणकारी बनाया जा सकता है। समाज को

Scanned by CamScanner

विभिन्न प्रकार की समस्याओं से मुक्त करने हेतु बुद्ध के कल्याणकारी वचनों का पालन नितान्त अनिवार्य है। बुद्धवाणी के पालन से एक स्वस्थ एवं निरोग समाज की स्थापना की जा सकती है। मानव जीवन को सुखमय बनाने में पालि भाषा व साहित्य की अहम् भूमिका निभाता है। यदि व्यक्ति वास्तव में अपने जीवन में सुख-शान्ति की अनुभूति करना चाहता है, तथा समाज एवं देश को समस्याओं से रहित बनाकर सुख-शान्ति, भाईचारे एवं विश्व-बन्धुत्व की भावनाओं को स्थापित करना चाहता है, तो उसे बौद्ध धर्म-दर्शन का सम्यक् अनुशीलन करना चाहिए। अतः पालि भाषा व साहित्य वर्तमान समाज में अति प्रासंगिक हैं। हमें यह बतलाते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि बौद्ध धर्म-दर्शन जैसे कल्याणकारी धम्म को जन-जन तक पहुँचाने के पवित्र कार्य के उद्देश्य से *'निब्बान बोधि'* नामक शोध-पत्रिका का प्रकाशन सन् 2007 से लगातार किया जा रहा है। इसी क्रम में *'निब्बान बोधि'* के ग्यारहवें अंक को अप्रैल 2017 में प्रकाशित किया जा रहा है। कुशीनगर भिक्षु संघ (कुशीनगर) एवं पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया (वाराणसी) के सहयोग से विगत अंकों की भाँति अप्रैल 2016 में *'निब्बान बोधि'* के दसवें अंक का प्रकाशन किया गया। यह अंक *'त्रिपिटकाचार्य भिक्षु धर्मरक्षित के निबन्धों का संग्रह'* के रूप में प्रकाशित हुआ। इसमें प्रकाशित इक्कीस महत्वपूर्ण लेखों, जो डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित के द्वारा लिखे गये हैं, को महाबोधि सोसायटी ऑफ इण्डिया से प्रकाशित होने वाले *'धर्मदूत'* से विशेष सहायता ली गयी। महाबोधि सोसायटी ऑफ इण्डिया (सारनाथ) द्वारा प्रकाशित *'धर्मदूत'* से प्राप्त सहयोग के लिए *'निब्बान बोधि'* अपनी हार्दिक कृतज्ञता अभिव्यक्त करता है। इसी क्रम में पालि भाषा व साहित्य के साथ-साथ बौद्ध धर्म-दर्शन के विविध विषयों पर आधारित विद्वानों एवं शोधार्थियों द्वारा विरचित विभिन्न शोध-पत्रों व लेखों को *'निब्बान बोधि'* के ग्यारहवें अंक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। हमें आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि पिछले प्रकाशित अंकों की तरह ही *'निब्बान बोधि'* का यह ग्यारहवाँ अंक भी पालि भाषा व साहित्य की उपयोगिता को जन-जन तक पहुँचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

इसके साथ आदरणीय पाठकों से विनम्र आग्रह है कि वे अन्य विषयों के समान ही पालि भाषा व साहित्य तथा बौद्ध धर्म-दर्शन से सम्बन्धित शोध पत्र-पत्रिकाओं को खरीदने व पढ़ने की इच्छाशक्ति विकसित करें, ताकि बौद्ध अध्ययन व पालि साहित्य से सम्बन्धित विभिन्न शोध-पत्रिकाओं एवं ग्रन्थों आदि के प्रकाशन का कार्य नियमित रूप से हो सके। हमारा ऐसा प्रयास रहा है कि इसमें प्रकाशित लेख बौद्ध धर्म-दर्शन से सम्बन्धित कोई भी महत्वपूर्ण पहलू अछूता न रह जाये। इस शोध-पत्रिका का मुख्य लक्ष्य पालि व बौद्ध साहित्य के शिक्षकों, अनुसन्धानकर्ताओं एवं छात्रों तथा बौद्ध श्रद्धालुजनों को बौद्ध धर्म-दर्शन के ज्ञान एवं पालि भाषा व साहित्य की उपादेयता को जन-जन तक पहुँचाना है। इसके साथ ही हमारा यह भी लक्ष्य है कि बौद्ध धर्म-दर्शन के अलावा भारतीय इतिहास, दर्शनशास्त्र व समाजशास्त्र के प्रबुद्धजन, जिज्ञासु, साहित्यकार, विद्वान व छात्र भी लाभान्वित हो सकें और उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। हम *'निब्बान बोधि'* की ओर से बुद्धवचन के संरक्षण एवं विकास में अपना योगदान देने वाले समस्त व्यक्तियों के सुखी, शान्त व धर्ममय जीवन की प्राप्ति की कामना करते हैं।

भवतु सब्बमङ्गलं

भवदीय

डॉ. ज्ञानादित्य शाक्य
(सम्पादक - निब्बान बोधि)
सहायक प्रोफेसर
बौद्ध अध्ययन एवं सभ्यता संकाय
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

बुद्ध घोष
(सह-सम्पादक - निब्बान बोधि)
सहायक प्रोफेसर
पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

Scanned by CamScanner

विषय-सूची

➤ सम्पादकीय

➤ समर्पण

➤ कुमारियों को बुद्ध की शिक्षा 1
त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित

➤ चार आर्यसत्य में दु:ख का अस्तित्व 4
डॉ. बालचन्द्र खाण्डेकर

➤ बौद्ध धर्म में कर्तव्य एवं दायित्व के आयाम 9
प्रो. प्रीति कुमारी दूबे

➤ जातक-कथाओं में वर्णित चैत्य व स्तूप से सम्बन्धित आस्थाएँ 17
डॉ. सुरजीत कुमार सिंह

➤ पालि साहित्य का वैश्विक योगदान 22
डॉ. रमेशचन्द नेगी

➤ शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा उपदेशित अहिंसात्मक यज्ञ 26
डॉ. नेत्रपाल सिंह बौद्ध (डॉ. भिक्षु धम्मपाल थेरो)

➤ अपदानपालि में वर्णित अभिरूपनन्दाथेरी 33
डॉ. ज्ञानादित्य शाक्य

➤ सिद्धार्थ गौतम : सम्बोधि के सात सप्ताह 46
बुद्ध घोष

➤ तिब्बत में लामावाद परम्परा की शुरुआत 52
शुभांगी शंभरकर

➤ चरियापिटक में वर्णित दान 57
उमादत्त

➤ पालि साहित्य में वाराणसी की भिक्षुणियाँ एवं उपासिकाएँ 64
अजय कुमार मौर्य

➤ डॉ. भीमराव अम्बेडकर की संसदीय प्रजातन्त्र की प्रासंगिकता 70
चम्पालाल मंद्रेले

➤ कोसल जनपद में श्रावस्ती का स्थान 77
धर्म प्रिय बौद्ध

Scanned by CamScanner

- ब्रह्मजालसुत्त में शीलः एक विवेचनात्मक अध्ययन — 86
  प्रियंका कुमारी
- बौद्ध धर्म में प्रतीकोपासना का महत्व — 93
  स्वतन्त्र कुमार मौर्य
- बौद्ध धर्म-दर्शन में चार सम्यक् प्रधान — 98
  लिच्छिवी
- **The Concept of Vedana in Buddhist Meditation** — 103
  Dr. Manish T. Meshram
- **Revival of Buddhism in India** — 112
  Bhikkhu Dr. Upanand
- **Book Review** — 121
  Dr. Krishna Kumar Mandal
- **पुस्तक-समीक्षा** — 125
  प्रो. रमेश प्रसाद
- **पालि दिवस का सातवाँ सम्मेलन : लखनऊ में सम्पन्न एक रिपोर्ट** — 128
  भिक्षु नन्द रतन
- **पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया (वाराणसी) के लक्ष्य** — 132
- **पालि दिवस के सातवें अधिवेशन से सम्बन्धित छायाचित्रों का संग्रह** — 133
- **कुशीनगर भिक्षु संघ, कुशीनगर की गतिविधियों से सम्बन्धित छायाचित्रों का संग्रह** — 137

ISSN : 2229-3728 : Nibbāna Bodhi Volume XI

कुमारियों को बुद्ध की शिक्षा

त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित

बौद्ध धर्म में पुरुषों तथा महिलाओं को समान स्थान प्राप्त है। सभी अपने कर्मों के अनुसार ऊँच तथा नीच बन सकते हैं और सद्गति अथवा दुर्गति प्राप्त कर सकते हैं। भगवान बुद्ध ने महिलाओं को भी बुद्धि स्वातन्त्र्य का उपदेश दिया पुरुषों से कहा कि तुम महिलाओं की सेवा करो, उनसे ही सेवा ही अपेक्षा न करो। उन्होंने *सिगालोवाद-सुत्त* में पति-पत्नी के कर्तव्यों को बतलाते हुए कहा कि वह अपनी की सेवा पाँच प्रकार से करे - वह पत्नी का सम्मान करे; उसका अपमान न करे; पर-स्त्रीगमन न करे; उसे धन-दौलत प्रदान करके घर की स्वामिनी बना दे और आभूषण-वस्त्र इच्छानुसार प्रदान करे।

एक समय भगवान बुद्ध श्रावस्ती के जेतवन विहार में रहते थे। उस समय कोशल नरेश प्रसेनजित की रानी मल्लिका से एक पुत्री का जन्म हुआ। राजा भगवान् के पास बैठा उपदेश सुन रहा था। वहीं एक दूत ने इस सन्देश को राजा से सुनाया। राजा ने जब सुना कि मल्लिका को पुत्री उत्पन्न हुई है, तब उसका मुख उदास हो गया। वह कुछ चिन्तित हो गया। इसे देख तथागत ने कहा - राजन्! कोई कोई स्त्रियाँ भी पुरुषों से बड़ी-चढ़ी, बुद्धिमती, शीलवती, सास की सेवा करने वाली तथा पतिव्रता होती हैं, अतः इसका पालन-पोषण कर। दिशाओं को जीतने वाला महा शूरवीर उससे पुत्र पैदा होता है, वैसी अच्छी स्त्री का पुत्र राज्य का अनुशासन करता है।

भगवान बुद्ध ने महिलाओं को भिक्षुणी बना तथा उन्हें ज्ञान प्राप्त कराकर महान कार्य किया। इस महायज्ञ में उनको दूध पिलाने वाली मौसी महाप्रजापती गौतमी, उनकी पूर्व धर्मपत्नी यशोधरा जैसी सैकड़ों नारियों ने सम्मिलित होकर अपना और जगत् का कल्याण किया। नारी समाज पर तथागत की महान् करुणा थी। जैसी करुणा भगवान बुद्ध की महिला समाज पर थी, वैसी आज तक किसी भी धर्म के संस्थापक अथवा गुरू में नहीं पाई गयी है। अन्य धर्मों में जहाँ स्त्रियाँ माया, आत्माहित, शूद्र के समान नीच और हेय समझी जाती हैं, समाज में उनका कोई स्थान नहीं होता, वे घर में छिप-छिपाकर रखी जाती हैं तथा केवल सन्तान उत्पन्न करने और पालन-पोषण करने मात्र का दायित्व उन पर माना जाता

Scanned by CamScanner

म्यानमार बुद्ध विहार में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर सम्मिलित हुए उपासक एवं उपासिकाएँ

ग्राम सिरसिया रामपुर में रथयात्रा की शुरूआत करते हुए ए.बी. ज्ञानेश्वर के साथ
भिक्षु महेन्द्र, भिक्षु नन्द रतन एवं समस्त ग्रामवासी

Scanned by CamScanner

ISSN No. : 2229-3728

गंधकुटी, जेतवन, श्रावस्ती

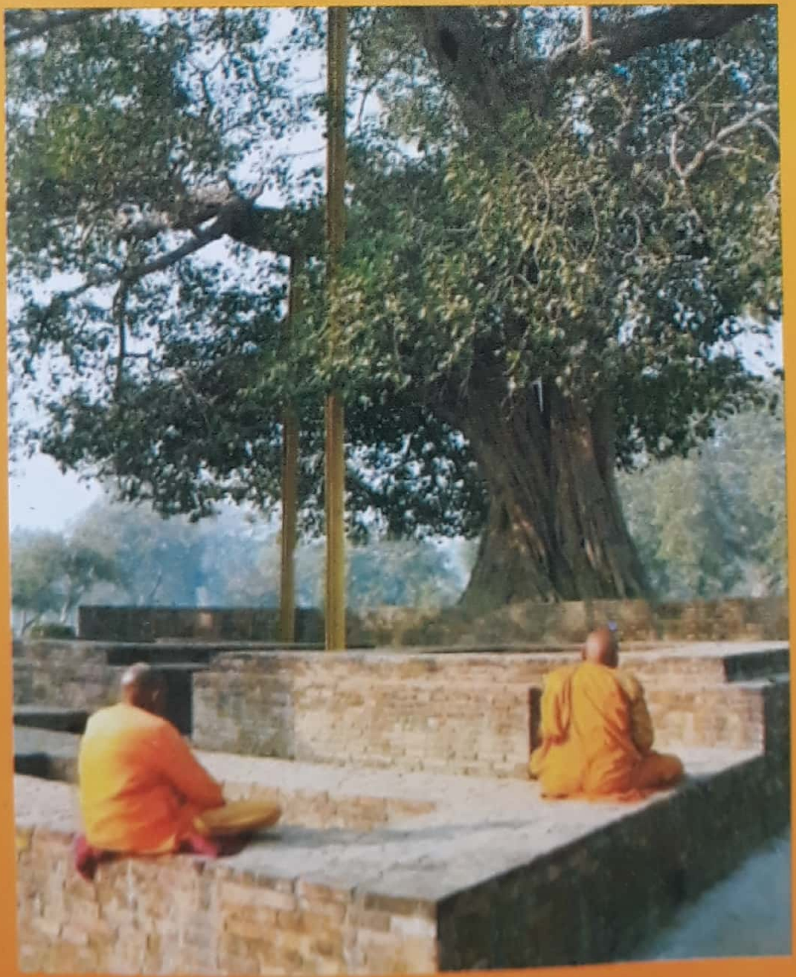

आनन्द बोधि, जेतवन, श्रावस्ती

Scanned by CamScanner